

Padma Bhushan



DR. SYED KALBE SADIQ (POSTHUMOUS)

Dr. Syed Kalbe Sadiq was an internationally renowned Islamic scholar, a liberal thinker, a social reformer, a modern educationist, a philanthropic leader, a voracious orator, and above all, a great human being – 'A Messiah of the Downtrodden'. The Vice President of All India Muslim Personal Law Board and Shia-cleric who spent his entire life serving mankind by providing modern education to underprivileged children, especially girls of Muslim community, ensuring their employment after the completion of their education, bringing followers of different faiths together, standing for rights of women and strengthening the bonds of brotherhood, was loved and admired not only by the community but also by the people of all sects and religions all over the world.

2. Born on 1st January, 1936, Dr. Sadiq belonged to the reputed family of Lucknow. He received his early education from a madarsa of Lucknow. He then moved to Aligarh Muslim University, Aligarh and obtained the degree of Ph. D. in Arabic Literature. Besides Arabic, he had mastery over Urdu, Persian, English and Hindi Languages. He was an orator par excellence- to inform and to reform. What distinguished him from other religious scholars was his ability to reach out to people across communities and be vocal about his views. He would never shy away from controversial subjects.

3. Dr. Sadiq staunchly believed that education and only education can uplift the underprivileged and the poor. As the Saviour of humanity, he waged a war against illiteracy and ignorance prevalent in the community. It was his philanthropic vision that he established Tauhidul Muslimeen Trust (TMT) in 1984 to provide educational assistance and scholarship to the needy and poor students. The educational, charitable and constructive projects running under his patronage include Tauheedul Muslimeen Trust (TMT) Lucknow; Unity college, Lucknow; Unity College II Shift, Lucknow; Unity Industrial Training Centre, Lucknow; Unity VEDA College, Lucknow; Unity Public School, Allahabad; M.U. College, Aligarh; Unity Computer Centre, Lucknow; Unity Free Education Programmes in Lucknow, Jaunpur, Jalalpur, Prayagraj, Barabanki, Moradabad, Aligarh, etc.; HIZA Charitable Hospital, Lucknow; T.M.T. Medical Centre, Shikarpur, Uttar Pradesh; T.M.T.'s Widow Pension Scheme; and T.M.T.'s Orphan Educational Scholarship Scheme. He was also the President of Era's Medical University, Lucknow and the General Secretary of All India Shia Conference besides being a member of Anjuman-e-Wazifiya-e-Sadaat-o-Momineen.

4. Dr. Sadiq had supported the cause when women offered Friday Namaaz alongside men at Asafi Masjid at BadaImambada for the first time in the history of Lucknow on August 15, 1997. He is probably the first religious scholar of the entire Muslim world, who on the basis of astronomical and observatory calculations predicted the date of Eid-ul-Fitr. He worked specifically to pacify the rift between Shia and Sunni. In this regard, a unique step was taken by him in 2008 when he offered Eid-ul-Fitr prayer under the Imamate of Sunni Imam. He advocated not just Shia-Sunni unity but also Hindu-Muslim unity and his concerted efforts along with other secular Hindu leaders to maintain peace and harmony were truly commendable and well recognized throughout the country.

5. Dr. Sadiq till his last breath worked for the unity, integrity and moral progress of the country. His contribution towards eradicating poverty, illiteracy and corruption from society is unparalleled and priceless.

6. Dr. Sadiq passed away on 24th November, 2020.



डॉ. सैयद कल्बे सादिक (मरणोपरांत)

डॉ. सैयद कल्बे सादिक एक अंतरराष्ट्रीय रूप से विख्यात इस्लामी विद्वान, एक उदारवादी विचारक, समाज सुधारक, आधुनिक शिक्षाविद्, परोपकारी नेता, एक प्रखर वक्ता, और सबसे बढ़कर, एक महान इंसान थे। वह ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के उपाध्यक्ष और शिया-मौलवी थे जिन्होंने गरीब बच्चों, विशेष रूप से मुस्लिम समुदाय की लड़कियों को आधुनिक शिक्षा प्रदान करके, उनकी शिक्षा पूरी होने के बाद उनके लिए रोजगार सुनिश्चित करके, विभिन्न धर्मावलम्बियों को एकजुट करके, महिलाओं के अधिकारों के लिए खड़ा होकर और भाईचारे की भावना को मजबूत करके अपना समूचा जीवन मानव सेवा में लगा दिया। उन्हें न केवल अपने समुदाय अपितु दुनिया भर के सभी संप्रदायों और पंथों के लोगों का प्यार और प्रशंसा मिली।

2. 1 जनवरी, 1936 को जन्मे, डॉ. सैयद कल्बे सादिक लखनऊ के नामी परिवार से ताल्लुक रखते थे। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा लखनऊ के एक मदरसे से प्राप्त की। इसके बाद वह अध्ययन करने अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ चले गए और वहां से अरबी साहित्य में पीएच.डी की डिग्री प्राप्त की। अरबी के अलावा उन्हें उर्दू, फारसी, अंग्रेजी और हिंदी भाषाओं का ज्ञान हासिल था। वह जागरूकता पैदा करने और सुधार लाने के मामले में एक उच्चकोटि के वक्ता थे। वह जिस बात में अन्य धार्मिक विद्वानों से अलग थे, वह थी अन्य समुदायों के लोगों से सम्पर्क करने और अपने विचारों के प्रति मुखर होने की क्षमता। वह विवादास्पद विषयों से कभी मुंह नहीं मोड़ते थे।

3. डॉ. सैयद कल्बे सादिक पक्के तौर पर मानते थे कि केवल शिक्षा से ही पिछड़े और गरीब लोगों का उत्थान हो सकता है। यह उनकी सहृदयता ही थी कि जरूरतमंद और गरीब छात्रों की शिक्षा और छात्रवृत्ति प्रदान करने के लिए उन्होंने 1984 में तौहीदुल मुस्लिमीन ट्रस्ट (टीएमटी) की स्थापना की। उनके संरक्षण में चलने वाली शैक्षिक, धर्मार्थ और रचनात्मक परियोजनाओं में तौहीदुल मुस्लिमीन ट्रस्ट/यूनिटी कॉलेज/यूनिटी इण्डस्ट्रियल ट्रेनिंग सेंटर/यूनिटी वेदा कॉलेज, लखनऊ; यूनिटी पब्लिक स्कूल, इलाहाबाद; एम.यू. कॉलेज, अलीगढ़; यूनिटी कंप्यूटर सेंटर, लखनऊ, जौनपुर, जलालपुर, प्रयागराज, बाराबंकी, मुरादाबाद, अलीगढ़ आदि में यूनिटी निःशुल्क शिक्षा कार्यक्रम, टी.एम.टी. मेडिकल सेंटर, शिकारपुर, उत्तर प्रदेश, टी.एम.टी. एकता मुक्त शिक्षा कार्यक्रम, हिजा चैरिटेबल अस्पताल, लखनऊ; टी.एम.टी विधवा पेंशन योजना; और टी.एम.टी अनाथ शैक्षिक छात्रवृत्ति योजना शामिल हैं। वह इरा मेडिकल यूनिवर्सिटी के अंजुमन-ए-वजीफिया-ए-सदात-ओ-मोमिनेन के सदस्य होने के अलावा इराज (ERA'S) चिकित्सा विश्वविद्यालय लखनऊ के अध्यक्ष और अखिल भारतीय शिया सम्मेलन के महासचिव भी रहे।

4. जब महिलाओं ने 15 अगस्त, 1997 को लखनऊ के इतिहास में पहली बार बड़ा इमामबाड़ा स्थित असफी मस्जिद में पुरुषों के साथ जुम्मे की नमाज की पेशकश की थी तब डॉ. सैयद कल्बे सादिक ने इसका समर्थन किया था। वह शायद पूरे मुस्लिम जगत के पहले धार्मिक विद्वान हैं, जिन्होंने खगोलीय और वेधशाला गणना के आधार पर ईद-उल-फितर की तारीख की भविष्यवाणी की थी। उन्होंने शिया और सुन्नी के बीच दरार को शांत करने के लिए विशेष रूप से काम किया। इस संबंध में उनके द्वारा 2008 में एक अनोखा कदम उठाया गया था जब उन्होंने सुन्नी इमाम के इमामबाड़ा के तहत ईद-उल-फितर की नमाज अदा की थी। उन्होंने न सिर्फ शिया-सुन्नी एकता बल्कि हिंदू-मुस्लिम एकता की भी वकालत की और शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए अन्य धर्मनिरपेक्ष हिंदू नेताओं के साथ उनके ठोस सराहनीय प्रयास के कारण वह देश भर में पहचाने गए।

5. डॉ. सैयद कल्बे सादिक ने अपनी अंतिम सांस तक देश की एकता, अखंडता और नैतिक प्रगति के लिए काम किया। उन्होंने समाज से गरीबी, अशिक्षा और भ्रष्टाचार को मिटाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

6. दिनांक 24 नवंबर, 2020 को उनका देहांत हो गया।